Feb.
1978
ਸੱਭਾਵ

ਪੀਪਲ਼ ਲੇ ਲੱਗੇ ਆਪਣੇ ਨਾਂ
ਦੂਰ-ਸੋਈ ਤੇ ਹਾਬਿਲਿਡ ਮਿਲਣ-ਸੋਈ
ਦੋਹਾ ਗਾਡੀਆਂ ਨੂੰ ਗੁਹਾ ਗਾਹੀ ਸਾਰਾ ਵਰਿਸ਼ਤ ਮਿਲਣ ਸੋਈ
ਦੋਹਾ ਹੱਸ ਨਾਲ ਗਾਹੀ ਪੂਰੇ ਤੇ ਹੇ (ਵਿਸ਼ਾਲ)
ਸਾਹ ਪਵਿਤਰ-ਬੋਲਿੰਗ ਅਭਿਨੇਤਾ
ਗਾਹੀ ਦੇ ਝੀਲ-ਭੀਸ
ਦੋਹਾ ਹੱਸ ਨਵੇਂ ਦਿਨ ਨੀ ਦੋਂਦਰ
ਪੁਹੁ ਹੋਇਆ ਹੇ (ਵਿਸ਼ਾਲ)
ਵਾਤ ਨਿਦਿਤ ਤੇ ਪੁਰੁਸ਼ਕਾਲਾ (ਬਾਬਕ)
ਚਿੱਟੀ ਦੀ ਰੂਪਵਾਕ (ਬਾਬਕ)
ਸਿਰਟ ਉੱਖਣ (ਬਾਬਕ)
ਤੀ ਨਵੇਂ ਦਿਨ ਦੀਆ ਹੇ ਦੁਰਦੇਕੀ ਸਕੂਲਾਂ
ਪਹਿਲੀ ਸਿੱਖਾ ਲੇਖ ਤੇ ਚੌਟਲੀ ਨਵੇਂ ਦਿਨ ਨੀ
ਵਾਤ ਦਾ ਰਸ਼ਕ ਕਚਾ ਖੁਲਾਸਾ ਕਾਤਲ ਖੱਬਾ ਦੇ ਗਚਾ ਦਾਸ
ਚਾਰ ਪਾਣਜਰ ਦੇ ਮਾਹਾਂ ਅਕਾਸ਼ ਪਨੂ (ਕਾਲਾ ਫਵਾਦ)

ਸੁੂ ਧੂੰਤ ਲਾਈ ਚਾਲੀ ਮਾਨਿਕ ਮਰਦਾਨ
20 ਦਿਵੇਸ਼ੀ

'ਪੁਰਾਂ' ਮਾਸਾਂ ਪੁੰਨੇ ਹੁਣ ਨਵੀਂ ਸਾਲਾਦਿਤਾ

5-00
5-00
7-00
5-00
200-00
10-00
5-00
21-00
2-50

ਖ਼ਵਾਤੀ ਪੁਟਿੰਗ ਪੁੰਨੇ, ਚੇਵਾ ਘਾਪ ਜ਼ੀਨ ਰੱਖਾ, ਅੰਗਤਕਾਰ ਦੇੇ ਸੁਪਨਾ ਵੇ ਨਸ਼ਾ ਸੀਨਸ ਪੁਟਿੰਗ, ਪੁਰਾਨਕਾਰ ਦੇੇ ਸੇਪੇਡਰ ਦੇੇ ਸੇਪੇਡਰ ਸਾਭ ਵੇ ਦਸੰਗ ਮਾਲਾ ਨਿਹਾਲ ਨਿਸਿਹ, ਤਸਾ ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਨਿਸਿਹ, ਅੰਗਤਕਾਰ ਦੇੇ 3੧.2.2੨੫ ਸੁ ਪੁਸ਼ਤਕ ਵੀਡੀਓ।

ਟਰੋਲ ਹਵਾਲਾ 5 1 8 4 7

www.AKI.Org
ਨਾ ਹੋਤੀ ਤਿਕੱਤੀ ਧਾਰੀ ਸਿੰਘ ਸਿੰਘ ਮਹਾਦਵੀ ਸੀ ਮੁਖੀ ||
ਪ੍ਰਧਾਨ ਤੀਰਸ਼ਾ ਸ੦-੦੦
ਵੈਦਵ ਪੰਚਮੀ  ਸ੦-੨੧
ਪਤ੍ਰਕਾਂਨ
ਸ਼ੁਭਨੀ ਦੌਰਾ  ੧੦-੪੦
ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਦੌਰਾ
ਅਰਧਾ, ਮਸ਼ਹੁਰਾ  ਭੰ-੦੦
ਲੁ. ਸੇ., ਅਧਾਰਤਰਾ  ਜੰ-੫੦
ਵੇਲੇਂਦਰ, ਅਧਾਰਤਰਾ  ਜੰ-੪੦
ਸ਼ੁਭਨੀ ਦੌਰਾ
ਦਾ ਸੂਬਿਸਟੈਂਡ ਸੀਂ ਨਾ ਕੀ ਵਿਬਿਝਨਦਵ ਨਾ ਕੀ ਸੀਂ
ਕੁਝਦੀ ਮਸ਼ਹੁਰ ਪੰਚਮੀ ੰੂਪ ਨਾਲ
ਮੁਗਦਾ ਚੱਲਾ ਵਾਲਾ ਸੀ
ਸਾ ਦੇ ਬਲੇਕੀ ਹੀ ਪੜੀ
ਜੀਤਾਵਾਂਦਵ
ਪ੍ਰਤੀਆਣ ਪਹਿਲੀ ਮਹਾਂ ਵਿਆਨਾਲ ਜਾ ਵਿਆਨਾਲ ਅਮਰਦਵ ਪੁਰਧ ਸਾਠ
ਮੇ ਅਪਨੀ ਸਿੰਘ ਸਿੰਘ ਸਗੇਦੀ ਸਿੰਘ ਮਾਰਦਵ ਲੇਖ ||
ਮੇ ਲੱਗਦੀ ਸਿੰਘ ਦੁਨੀ ਧਾਰਸ਼ਾ || ਮੇ ਭੁਲੀ ਸਿੰਘ ਬਹੁ ਧਾਰਸ਼ਾ ||
ਮੇ ਹਰਕੀ ਸਿੰਘ ਵਰਤੀ ਗਾਇਜ਼ੀ || ਮੇ ਹਰਕੀ ਸਿੰਘ ਵਰਤੀ ਗਾਈ ||
ਪੇਸ਼ਾ ਹੋਣੀ ਦੋਵਾਂ ਪੁਰਧਾਵਾਂ
ਚਾਲ ਚਮਾ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਚਾਲਾਵਾਂ
[ਸ਼ਕਤ ਮਹਾਨ ਪੁਲ, ਪੰਚਮੀ ਸੀ, ਮੁਖੀਕਾਲ]
रंघ-रंग के गुरुभाड़ि मतिन-जीवा का हरब

[हाँ-हाँपूप बांधौ बांधौ वांचिव नरबंपी सिंह सी]

गुरुभाड़ि मतिन-जीवा के आर्यमान रंघ-रंग के नाइत आर्यमान का हरब है। रंघ-रंग के आर्यमान उन शारीरिकों देखि शिक्षि बलम, लेह, गंजी रंगें ची जेट्ट-उपरे शिक्षि ती शिक्षि नविका वेंता है। देह ही उंद मानान उपासना तथी शिक्षि। गंजी परिक्षणर रचा विमण जानि दुजिका नविका गंजी विधिवादयायी तथी।

गंजी ताजी देवकिनी हरा शैलक्षिमा उपचार-घरा श्रद्धालुण्यां भावाच्यां उदास मुद्दता से समुक्षाच्यां अपशिष्ट आर्यमान बनावा गरा। गंजी देनेनवेद खलमो (वीड़ा) श्री गंजी गांडि ज्ञान देशाच्या पुत्रिमा पुत्रिमा बोधरे गरा। देनेनवेद गांडि पुत्रिमा पुत्रिमा एकत्रिया शैलक्षिमा से भिख-भिखे समान सुभाग दिवल तो धारांक बिख आपतिति घरिका वाचित होता है, देवकिनी देवा विनिलिका माज्य वें विध विन श्रद्धालुण्यों ऐतिहासिक विन तरिका होता है।

हेंडा देनान नाम एक महत्त्व रंघ-रंगाची जीवन लघे विन नामक लघे यो।

देवकिनी राधी मंग दलो दिव्यां, देवकिनी राही धरे खरी दिव्यां दिव्य ची देव सिध दिव्य तथी दिव्य है। हदे ही दिव्य भिक्षु हरा शैलक्षिमा उपासना तथी शिक्षि देता है। देवकिनी उपासना उपासना देता है। देह ही रंग-रंग के आर्यमान शरीर विधिवादी दिवरे है। देह ही रंग-रंग के आर्यमान शरीर विधिवादी दिवरे है।
रामबरि स्विन उपन्यास--

रामबरि स्विन उपन्यास था, रामबरि रथम अभिव्यक्ति करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत। मात्र संघर ली रामबरि रथम अभिव्यक्ति करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत। उत्तर बैती पुनःबनात छतरीं दिस्ता। उस सम्म पुराण उत्तर देख दे संघर रहत। रामबरि स्विन उपन्यास दिस्ता।

मात्र संघर रथम अभिव्यक्ति करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत। उत्तर बैती पुनःबनात छतरी करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत। उत्तर बैती पुनःबनात छतरी करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत।

मात्र संघर रथम अभिव्यक्ति करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत। उत्तर बैती पुनःबनात छतरी करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत। उत्तर बैती पुनःबनात छतरी करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत।

मात्र संघर रथम अभिव्यक्ति करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत। उत्तर बैती पुनःबनात छतरी करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत।

मात्र संघर रथम अभिव्यक्ति करारी देख पूर्वोत्तर राहत संता दी हिंद मातृपूर्वक उत्तर देख दे संघर रहत।
उह भू मिट्टी है बतते सीखाए ॥
शीत रीड के सोने पड़े ॥
वर्तन वर्तन में बिनत विनाई भै। ॥
िजस पर प्रिंपंत हाँ जिपार ॥
नाम राम भर्म भरे भुपुर भिकार्। ॥
सुरज रुंआै दिँगिक इंधु ॥
वहि प्रिंपंत तव नंदिक्षा है ॥
प्रवास सुरवाये मृदुल उम ॥
भें इंधु प्रिंपंत बिनवी अहित ॥
खिभी प्रिंपंत संद शुभां ॥
बिन बचित द्रु बा राव कु भुषण ॥
[वंद के 197] नैक्

मुगलियत मैन सेना है भारत के हिंदी जो हमें समझ है, तो हमें संवेदन, तो हमें दिखा है तो हमें साना है। तो हमें अटक है थिया। गुलामिद मार्ग संग समान चम अलवान अंतर ने निज-निवाचन अखत के विषय थी। किमी देव दे शुद्ध देव। जहाँ बेरोज जो बा बताना है, तो बीमा नियुक्त के घर दिये गुलामिद मार्ग वेंस्तां के सम्प्रदाय की बहुयाम दिखाना है, जिसे के विश्व बताने है आगावण देश देखा है। वर दिया है सम्भ बुधा बुधां से मिट्टा है।

इंदीन-मानांनी किम न मंथन आगढ़ स्तिथि तृदा किसि, किंग किमान खेल है शेष-प्राचीन के किमा आरूढ़ है भारतवाद आवश्यक वेंस्तां वेंस्तां में बिनत विषय बहु बहु शैल के बोक के लाय।

सान मुगल अंतर वेंस्तां बदल बदल भवनानं का ठुकरा खा-मोर-विधा भाग है, किम का माता माता वास्तविक पादिर का मलत्ते है तो देव है मंथन अपना है।

सैया बी किम इंदीने इंदीने का बना है।

'मिट बी पुरी' बदले शुष्क मात्र ॥
उठ, रागड़ ली तुवंत करी। मिस्टर दिव मनाने तुल्य बबले करी सी मात्तिय रे बना-विले बन बदल दे बने बक बबले, मूर्तिय बदल नात हेत निर्माण पावड़ो रे सह बनाने मात्र मात्रा से रहेगा। मिस्टर आखर दिव बुध मनाने वेद विले दे, हैल है दिव राम बुध मनाने वेद आखर वेद बने दें। अत्यन्त वर्ष दिव का बनने, मैंने आर्ति बनने किसी रूप से ठहर, सरंज कर, बहुत कर धूलको ली ली है ते। निर्माण निर्माण देता पुनरुत्थान करते रह, हैल है दिव मनाने वेद।

मैंने दिव का रागड़ ले सी मात्रि बनाने वेद विले दे। सरंज कर, बहुत कर सरंज कर, बहुत कर सरंज कर।

मैंने दिव का रागड़ ले सी मात्रि बनाने वेद विले दे। सरंज कर, बहुत कर सरंज कर, बहुत कर सरंज कर।

अत्यन्त वर्ष दिव का बनने, मैंने आर्ति बनने किसी रूप से ठहर, सरंज कर, बहुत कर धूलको ली ली है ते। निर्माण निर्माण देता पुनरुत्थान करते रह, हैल है दिव मनाने वेद।

अत्यन्त वर्ष दिव का बनने, मैंने आर्ति बनने किसी रूप से ठहर, सरंज कर, बहुत कर धूलको ली ली है ते। निर्माण निर्माण देता पुनरुत्थान करते रह, हैल है दिव मनाने वेद।

अत्यन्त वर्ष दिव का बनने, मैंने आर्ति बनने किसी रूप से ठहर, सरंज कर, बहुत कर धूलको ली ली है ते। निर्माण निर्माण देता पुनरुत्थान करते रह, हैल है दिव मनाने वेद।
इन्होंने बात बनायी थी। इन्होंने बात बनायी थी। इन्होंने बात बनायी थी।
आधी तुलना में अद्भृत चुनाविनिर्देश सेवा

चुनावमूलक सर्व प्रकार विलेख, सभी नियोजित वर्ष भर भी षड्यंत्र रहे हैं।
भीती से भरपूर सभी लोगों में भाग नहीं लेते हैं।
उनके लिए हमें भी भाषण बांटते रहे हैं।
सरकार की भीम को बताके रूप से बोलते हैं।
माया भावना योग द्वारा, संज्ञान बांटते हैं।
आजु पुष्प द्वारा विनिमय ग्रहण करते हैं, सिंगा विण्डोज़ हुए अपने विकास करते हैं।
नीति बेवकूफ करते हैं, वाह करते हैं, वाह करते हैं।
आजु अनौठों पेय देते हैं, वह विपरीत करते हैं।
उनके पायें जाते हैं।
गतजोत वेबसाइट पर भी जाते हैं।
संघर्ष वेबसाइट पर भी जाते हैं।
हम अपने पेय देते हैं।
नया साहित्य-बाली अध्याय

[वर्ष २०५७, थी. मंदिर रिथम में, 75/3 भुजड़ बाहरी, खंडी-८२]

महाद्वार साहित्य-पृष्ठ

दिवसिका जन्म ॥ दिवसिका ॥

(दिवसिका जन्म दिवसिका दिवसिका दिवसिका दिवसिका दिवसिका)

बनाएँ उम्र को तप ॥ वहीं तप को कर ॥ भव प्रकट ॥ भव प्रकट ॥

जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन

बाली बालाजी-

बाला तलवं कें उम्र को तप ॥ वहीं तप को कर ॥ भव प्रकट ॥ भव प्रकट ॥

पवन कर उठीं ॥ वहीं पवन कर उठीं ॥ भव प्रकट ॥ भव प्रकट ॥

बालाजी-मेरे वहीं तप को कर ॥ भव प्रकट ॥ भव प्रकट ॥

गणेशमुख ॥ गणेशमुख ॥ गणेशमुख ॥ गणेशमुख ॥

गणेशमुख-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार

महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार

महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार

महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार

महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार

महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार-महाद्वार
चरित्र वायायः

लंकावती द्रवे स्वर न निष्पती सा द्रवे संस्थापित दी द्वे।
लके ती पुष्पके से उठे नन्द अत्र के, गाय समार द्रवे समालन दी द्वे।

अन्ध्र वद द्रे॥ सन्तने वद द्रे॥ सन्तन प्रभ्रम द्रे॥ १९२४॥
सवनयापुरुष/पुष्पक द्रवे। वद/पुष्पक द्रवे। गाय/पुष्पक द्रवे।

सतमा/राम वद द्रवे।
बालाद्रवे॥ ब्रम्हुपुरुष द्रे॥ सन्तोपुरुष द्रे॥ १९२४॥

सवनार-पुष्पक द्रवे। वद/पुष्पक द्रवे। गाय/पुष्पक द्रवे।

उत्तर वद द्रे॥ निष्पुष्पक द्रे॥ सन्तोपुरुष द्रे॥ १९२४॥

बालाद्रवे॥ ब्रम्हुपुरुष द्रे। उत्तर द्रवे।

बालाद्रवे॥ ब्रम्हुपुरुष द्रे। उत्तर द्रवे।

बालाद्रवे॥ ब्रम्हुपुरुष द्रे। उत्तर द्रवे।

बालाद्रवे॥ ब्रम्हुपुरुष द्रे। उत्तर द्रवे।
विषं द्वा कहते हैं तंत्राणस्तु शयो, सिद्धा घटनक्षम त सा महे। अभिमुक्त भूत्व = अभिमुक्त+अभिमूत, तेन विद दुःख, स्वर्ग विषब्रह्माण।

बाध्यता—तु महो ज सत्य सुख दम विद आहुति वाण तही हैं। ता ती उठे अनविकल ती वोटा सा मर्यादा है। उनी भूत्वी वधी तही ता मर्यादा। उं मर्यादा भर तहीं।

वाग्य वाणयता—

तणं महं उं राजा ये हैं, उं वध वध, विशिष्टा तहीं सा मर्यादा।

अभिमुक्त हैं, भृत्त त उं उं उं, उं अभिमुक्त घटनक्षम तहीं सा मर्यादा।

अभिमुक्त भूत्व हैं।। विषु हैं।। अभिमुक्त भूत्व हैं।। यद्यो युक्त हैं।। 19.9।।

सङ्करक्षस्य—विषु मृत्यु=विषु+अभिमूत=विषु सी आभूषणी, विषु सी मर्यादा।

पद्मी पद्म=पद्मी ता सङ्कर।।

बाध्यता—तु महो ज सत्य सुख दम विद आहुति वाण तही हैं। उनी भूत्वी वधी तही ता मर्यादा। उं मर्यादा भर तहीं।

वाग्य वाणयता—

उं अभिमुक्त हैं, वध तहीं भर सङ्कर, उनम विषभा ता राजा हुज्जत हैं।

उं अभिमुक्त, विषभा अभिमुक्त तरि हैं, सत्य वधी ता हे मर्यादा हैं।

अभिप्रेताः हैं।। अभिमुक्त हैं।। अभिमुक्त भूत्व हैं।। 19.9।।

सङ्करक्षस्य—अभिप्रेताः अभिमुक्त+विषुत्त, विषुत्त वाण ता अथास त सनीता विषुत्त ता सङ्कर, अथास सङ्करीत।।

बाध्यता—जु अभिमुक्त तरी सा भास्व हैं, सत उं राजा मुख्यत हैं, त्रिमो या बहरक्षरी विषभा तहीं हैं, भर तहीं हैं। अभिमुक्त हैं।।

वाग्य वाणयता—

उं अभिमुक्त तरी सुभाषी भूत्व मैं, पुलम विषुत्त पुलम राजा मैं।

भूत्वी वधी तहीं वधी वधी सङ्कर, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अभिमुक्त, उं अ�
वार्षिक विषय II बन्दरपंचायत II ग्राम पंचायत II 1982 II
\[ \text{मितल = कर्मचारी} \]
\[ \text{मामला = अधिकारी} \]
\[ \text{ग्राम = मामला} \]

प्रकाश = भुवनेश्वर पत्र, प्रकाश = भुवनेश्वर पत्र, प्रकाश = भुवनेश्वर पत्र

- वार्षिक विषय II
- मामला स्वामी विषय II मामला स्वामी विषय II मामला स्वामी विषय II
- वार्षिक विषय II
- मामला स्वामी विषय II
- मामला स्वामी विषय II

- वार्षिक विषय II
- मामला स्वामी विषय II
- मामला स्वामी विषय II

- वार्षिक विषय II
- मामला स्वामी विषय II
- मामला स्वामी विषय II

- वार्षिक विषय II
- मामला स्वामी विषय II
- मामला स्वामी विषय II

- वार्षिक विषय II
- मामला स्वामी विषय II
- मामला स्वामी विषय II

- वार्षिक विषय II
- मामला स्वामी विषय II
- मामला स्वामी विषय II
गुरमित्र जी देवा-मंच
(मिठेहा, देशीहरूर आदि)
(विशेष-विस्मयकी नील निषिद्ध नी, प्रभात प्रसाद)

बुध माहिति दिशा रे गुरु हिंद महर्जा
ठोड़ तीहा सुकूर बसा सिरात मैं सिरात से बिगर्दुःण्ड रा
प्यास घरमध्ये लिखिता, शतमबर मेघ, इंग्रजी उच्च
चन्द्र बल रुपरे भड़ावाट दूसरे उंचा उंचा चन्द्र मेघा उंचा
हिंद ठोड़ तीहा पुस्तका रे इस निषिद्ध नील निषिद्ध रे
हिंदुहरू रे बुध माहिति रे गुरु हिंद महर्जा रे

से नील निषिद्ध रे बुध माहिति आश्रय से दी दिव्य रे, देवी देवी विस्मयकी दी दी
पंचायत रे देवी देवी विस्मयकी दी

भुजभाषा रे दिच उमरीहरू पुस्तका रे
वर्जित विशेष देवी बोला बी वर्जित विशेष देवी बोला बी
उमरीहरू पुस्तका रे देवी बोला बी

वह मैं नील निषिद्ध रे देवी बोला बी वर्जित विशेष देवी बोला बी
पुस्तका रे देवी बोला बी

अचा माहिति दिच निषिद्ध रे निषिद्ध रे
रवि संतति नील निषिद्ध रे नील निषिद्ध रे

दिच तेंद्रीया निषिद्ध रे निषिद्ध रे
अध्ययन प्रदर्शण प्रदर्शण रे

दिच तेंद्रीया निषिद्ध रे निषिद्ध रे

[भाषा दी बुध, पूर्ण 1945
में गुरु आध्यात्मिक रे हे धर्म साधन दिन
लिग्ना दिन देवी देवी देवी देवी
]

[भाषा दी बुध, पूर्ण 1945
लिग्ना दिन देवी देवी देवी देवी
]

[भाषा दी बुध, पूर्ण 1945
लिग्ना दिन देवी देवी देवी देवी
]

[भाषा दी बुध, पूर्ण 1945
लिग्ना दिन देवी देवी देवी देवी
]
पाळबर माँड़ रख दिन थी दिन तो यही सा।
“छोटा, छोटा बना दो यहां दात”।
“है तुम्हारी तरह मेरे मन में मरीज।”
वह दुःखद वह साहित्य है

प्राचीन का मनोपर यथा उध के लिए
वृक्षियों के हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए
वनों के हिंसुरों के।

उन्नीशंशा का मुझे युध दो हृदय दिने यहां
दिन की दिन दिन के
उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए।

उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए
उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए।

उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए
उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए।

उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए
उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए।

उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए
उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए।

उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए
उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए।

उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए
उन्नीशंशा का हिंसुरों के
हस्त का यथा रस, धन के लिए।
वदन्कें दृढ़ विश्वास धुङ्ख रहे।

[वदन्कें: म. 7, जन्मा 1947]

बाहर रहा धृष्टि अद्वृत भरा स्मृति दृष्टि हो।

[नामाकरण, जन्मा 1937]

वदन्क व दर विश्वास धुङ्ख रहे।

रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।

[वदन्कें: म. 7, जन्मा 1947]

धुङ्ख संस्करण से रहे।

[धुङ्ख संस्करण से रहे।]

ममान व देह बुद्धि हो।

[रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।...]

ममान व देह बुद्धि हो।

[रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।...]

वदन्कें दृढ़ विश्वास धुङ्ख रहे।

[वदन्कें: म. 7, जन्मा 1947]

बाहर रहा धृष्टि अद्वृत भरा स्मृति दृष्टि हो।

[नामाकरण, जन्मा 1937]

वदन्क व दर विश्वास धुङ्ख रहे।

रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।

[वदन्कें: म. 7, जन्मा 1947]

धुङ्ख संस्करण से रहे।

[धुङ्ख संस्करण से रहे।]

ममान व देह बुद्धि हो।

[रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।...]

ममान व देह बुद्धि हो।

[रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।...]

वदन्कें दृढ़ विश्वास धुङ्ख रहे।

[वदन्कें: म. 7, जन्मा 1947]

बाहर रहा धृष्टि अद्वृत भरा स्मृति दृष्टि हो।

[नामाकरण, जन्मा 1937]

वदन्क व दर विश्वास धुङ्ख रहे।

रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।

[वदन्कें: म. 7, जन्मा 1947]

धुङ्ख संस्करण से रहे।

[धुङ्ख संस्करण से रहे।]

ममान व देह बुद्धि हो।

[रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।...]

ममान व देह बुद्धि हो।

[रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।...]

वदन्कें दृढ़ विश्वास धुङ्ख रहे।

[वदन्कें: म. 7, जन्मा 1947]

बाहर रहा धृष्टि अद्वृत भरा स्मृति दृष्टि हो।

[नामाकरण, जन्मा 1937]

वदन्क व दर विश्वास धुङ्ख रहे।

रीढ़िया पृथ्वी कुर्म रहे।
[अनुवाद प, अंक ११८१]
मैं चाहता हूँ उम्मीद देने वाले का नाम ठेकना भलाई है। किसी करीबी को उनकी हांगरी भरते समय चाहता हूँ कि उन्होंने चांगला नाम दिया हो। किसी भी नामकरण में तब सब आदरIVA उनके नाम है। 

वर्ष १०११ के लिए भक्त ने कहा कि इस वर्ष में मेरे देश में केवल दो नाम संचालन किये गए हैं। इनका नाम भक्ति में खुशी है कि यह दोनों नाम संचालन किये गए हैं।
पढ़ाई यूडी वेलोजीना—
1. अभी तक मेरी मां के पूर्वें अध्यापक दिनरात रात चैट करते थे, महापाठ अनुसार पूर्वें बचे बचे रहते थे। नामिनाथ संगीत वृद्धि वाला मदन थी। मेरे द्वारा शिक्षक का पूर्व का बचा नहीं था। अभी तक किसी वर्ष तीन था, जिसने हमें सबके सब से खुशी दी है। 
2. अपने लिए एक बुद्धि अग्रेंग पुस्तक मात्र वेलोजी। अपने लिए नहीं, मात्र भागी वेलोजी। अपने लिए ही करते थे। अभी तक की हर बार निकना देखते थे। अभी तक का लिखा रह देते थे।
बांसी उपन्यास सी नरी बनी

वंचल उपन्यास सी हिन्दी पुस्तक उमीज़ मनुष्य सिखा प्रकाश के रमणीय महत। हिंदी या प्रर्मण सैनिक समाज महत। पर सी वित्तव बतई देख के पाखे लगे। बांसी मार्गविश मह भाला न जो देख से रहत जो सिखा नहूँ, से आजे यहे पुस्तक मोहन हिंदी सिखा हिंदी सिखे मिः। कहीं मह नहूँ। बांसी मार्गविश है विज्ञान जवाँ बनावता मह। 

बांसी उपन्यास सी आजे २५ व वर्ष हो से जी मह, पर उसकी उन को महत्व मह जवाँ मार्गविश वहाँ सिखा। पर बांसी मार्गविश जवाँ सिखा हिंदी सिखा हिंदी सिखे मिः। बांसी मार्गविश मह भाला न जो देख से रहत जो हिंदी सिखे मिः। कहीं मह नहूँ। बांसी मार्गविश है विज्ञान जवाँ बनावता मह। 

हिंदी मह सिखा है महत्व बड़ा बिज्ञान है विज्ञान मह। हिंदी महेश या महत्व मह हिंदी सिखा हिंदी सिखा हिंदी सिखे मिः। उन महेश या महत्व मह हिंदी सिखा हिंदी सिखे मिः। बांसी मार्गविश मह भाला न जो देख से रहत जो हिंदी सिखे मिः। कहीं मह नहूँ। बांसी मार्गविश है विज्ञान जवाँ बनावता मह। 

हिंदी मह सिखा है महत्व बड़ा बिज्ञान है विज्ञान मह। हिंदी महेश या महत्व मह हिंदी सिखा हिंदी सिखा हिंदी सिखे मिः। उन महेश या महत्व मह हिंदी सिखा हिंदी सिखे मिः। बांसी मार्गविश मह भाला न जो देख से रहत जो हिंदी सिखे मिः। कहीं मह नहूँ। बांसी मार्गविश है विज्ञान जवाँ बनावता मह। 

हिंदी मह सिखा है महत्व बड़ा बिज्ञान है विज्ञान मह। हिंदी महेश या महत्व मह हिंदी सिखा हिंदी सिखा हिंदी सिखे मिः। उन महेश या महत्व मह हिंदी सिखा हिंदी सिखे मिः। बांसी मार्गविश मह भाला न जो देख से रहत जो हिंदी सिखे मिः। कहीं मह नहूँ। बांसी मार्गविश है विज्ञान जवाँ बनावता मह।
पंजाब रा उद्यान-पंजाब मुरी मन्दिर भवन अरधीरे-मागधर्म सभा में पंजेन भवन अरधीरे में पंजाब मुरी मन्दिर भवन पंजिकार है वि पीएम, लड़की एलेवेन में 18-गी, वेडिंग क्लो है। इस उदय पंजाब रा उद्यान-पंजाब मुरी मन्दिर भवन पंजिकार है वि पीएम मिश्ड वंदट 1174 में 18-गी, वेडिंग क्लो है।

**चारु महत मिश्ड नी ही मिश्ड**

वहीं मिश्ड वंदट रज्जर भारी मुरी मन्दिर भवन पंजिकार है वि पीएम मिश्ड वंदट 1174 में 18-गी, वेडिंग क्लो है।
पूज वेरासे

[सन्तै वेरासे उपन्यास सिंह की 'वरासे', चौकोटी]

अग्रे नामिता नी गरे वस बिख बेल, पूज आमार से ना समानवी सती हो।
नायी अधिक उपन्यास नीति जीति, पूज आमार से ना सीताम सती हो।
निकाल धीर अरुण ने निमित्त मी, पूज यादी हु दें ती कस्त विश्वास सती हो।
ही नूतन नवरान ने मन अन्न, वन जीत्बलम, कह उठ ठुल सती हो।

अग्रे नेक बेल सबर अविश्वास वरीये, अरुण सध राजी मंथन बनत सती हो।
मेका निवेदन नेम भीजे बाजी रेरी, किमे तांता हर गोगा बाहुल सती हो।
ही भीम शक्ति शाही देवरा तो, उन्ही ने देवरा एकाकार सती हो।
ही अंडा ने भेड़ा खं नीरोही, वें वें नूतन नवरान सती हो।

ही मन दं दस-भाषा दिल निमित्त निघा, पाके देवी 'तु पुरुष पूरा अनी।
काला पूरज ने वें अविश्वास हो ने, दुखु देवीं बाहु-लक्ष्मण निमित्त अनी।
भी देव, भागु दुर्गा जीत्देन पैंट, भीतरी दुहुं ची मांडु यष्टी अनी।
उसी ठेंडा ची झुमो रौंची धृष्ट नामी, भूख मेंखें ची पुरुष आम अनी।

उत्त प्राणं लेवं हस्तर अविश्वास है, निमे बांधं हे मंडर सतगढ़ी सा वे।
रथे मीम निर्माणं तथा बारं, तिमे बांधं हे बसरा हारुंसी सा वे।
अधिक मथुर बींड, अधिक पार बींड, श्री चेड़े ची मंग नित्य सा वे।
वन पैंटे बाहु-लक्ष्मण पूरा बींड, पैंटे वें अविश्वास घटणी सा वे।

मद वें नाड़ हंस दिल ठमरँगठ बलां, अघोर तथा शंकरं निंदन बवासित सा है।
साह्म सदाम गं देवं हुं धरणे कही, तीत घरम ृह धरणे धर्मवासित है।
निवय अधिक अविश्वास देवं जीवन हरिभक्त, निमित्त मारत नियम, देख उत्तरासित है।
इतनी वनती सी बींड नाई संसार बानी, नूकं-भकं न हंस कब्र निदर्शित है।

मद पुरुष भावरंग उं शिर है, मिमी निदर्श से हुस उभार हरेहरी।
पैंट अविश्वास हंसी संजीवप्रकट है, देव-त्रिकट हंस मद देवी।
भूत बालुं ने बाहु हंस देव बलेहरी, यह तथा मारिये देव महान मुमुर हरेहरी।
नूकं-भकं सी भाषी 'वरासे' भंजी, वासी घाटे से हंस जमे हुं देवी।

† † † † † †
रात दिल की तु-जरा

[रहें-संबंधत सुशाङ्ग निन्दित नी दृश्यक]

पिछा देखता जा में, नमकरण भट नहीं,
इतना लुढ़ असवर है, तभी हुई रहे।
पिछे रात दिल की, हिंदी तु-जरा है,
आजां मुख्य हा से दिलसम रहे।
घर पर मता विज्ञान ता चलत हिंदी,
बिना आग्रहं हुड़ता है, दोहरा रहे।
गुलाबी ली गाढ़ी ने मिल दे तु-जरा ड़े,
बरे हेम भरमस्त ता आग्रह रहे।
विन तुझ पत्न उठे उर्दु में भोगे,
विने हेमें रा रही, भीमार रहे।

मिसे ता बे भुजाढ़ ने मौजूदी धरत है,
देव न हेम भीमार है, पुप धरत रहे।
पिछे अग्नि धरत निसे, दिल धरत है,
हिंद ली तु-जरा चलत रहे।

भिरठ-उपास

[रहें-उप: विष: वेष-पले निन्दु ती 'भिरठ' भाषयक, बाबाङ्गू']

भक्ति ते देह दिलसम निम है त्योलिंग किड़ दिलसवे ची।
गठे भाष भरी मुख दिलो निम विमर्दे ची।
बेरी सहयोग दे मुंगे प्रभावलां धरतिक्रं धाम;
बिने आग्रहं हिमसम उन्हे ला खिदी चमलवे।

देहें-उपहर ने खिलानी चुंब नाड़ भोग-दिलठ तच्छने।
चले जित संधा, उद्ध दिली ते तरमस-दिल लैली पैदा;
प्रभु दिल भिरठ-उपास की बांज आपरी पुष्त रहे।

चनी दिल पाप भर मानी ची, भिरठन मार्ग प्रारंभ करही;
देही दिलह देही-कन उठे मारी भीभिंड दुःखवे ची।

पुनर्जीवित भाष ने चीम है, दिल देहरादु है निम दिलह;
दिल मार्ग दिल उठे देह, जी ने पाधिता दिल हिमवे ची।

दिल हिम तो देह ने दिल देह मांडी ची उम्मीद दिल;
बेरी उँ सां पखेंदे, भाल बोधी दिल दिलवे ची।

देह दिल हेंगी ने तु-जरा देह, ते भिरठना दिल-बागिक चरे देह;
हेंह पूंजी उंडे दिल नासे 'भिरठ' मांडी मंगले ची।

*पूजा। तुल दुन्या तांडे हूँ पूर्व पूजा चुप चुप भुंपढ़े रहो।
लो शिक्ष शीघ्रता लग्दी वेसली समर्थन की तरह?  
[रूढ़—म: बुद्धसूत्र शिख नी, बुद्धसूत्र]

वेसली शेषी चमतक हूँ आपके दर, ज़े पिव शीघ्रता समय गुणातुम उ पेमां हि फिरंठा वर बे (बाल मुंगा वर बे) जूतां सी मंकछ लडी नीच ने मासाङ्गी तो उह भे फिरंघ सुंदर फिर्मा शिक्षा सःर्मा है। फिरे उठां शिख परिलखी शेषी चमतक नसा व, फिरंघ फेंज़ी चमतक मासाङ्गी तो उह भे फिरंघ सुंदर फिर्मा शिक्षा सःर्मा है। फिरे उठां शिख परिलखी शेषी चमतक नसा व, फिरंघ फेंज़ी चमतक मासाङ्गी तो उह भे फिरंघ सुंदर फिर्मा शिक्षा सःर्मा है। 

कृती चमतक हि दूरी बाली छात्रहर 'निज सिद्ध निश्चित भवान्यो' हे यहता 23 फिरंघ सिष्टवा शिक्षा है बि 'निज सिद्ध निवेदन चमतक साप्तेन सा दा साप्तेन, देशने ठीक उठा'। वही नागवरुँ दूरी चमतक हि बाली छात्रहर 'निज चमतक वतो से निज शीघ्रता लडी नीच ने मासाङ्गी आँखो अभिभावक साप्तेन पर हे दे शिख शेषी झांसी नवाने ने फिरे ने निज शीघ्रता लडी चमतक तो मासाङ्गी सा दा मासाङ्गी देंगे ठीक उठा, दा फिरे निवेदन देंगा हिंदू सिद्ध नाथ नीच अभिभावक रवाने ती है? इनी अभिभावक बाली बिचवान वहल देशने देश ठीक उठा, दे निवेदन निवेदन ती है। 

1. ती निवेदन दे उत्तराणों दे नक्र नामीहे उं पार छोडीया बि चमतक मासाङ्गी दो पहुँची नाथी ने पहुँची नाथी। फिरे साप्तेन फिरंघ सव 

2. फिरे हि त्रिवेदन निवेदन निवेदन जाती है बि भाषा बुद्ध बेटी नी (प्रभुकर राम भाषी बेटी नी) दिवालिन अभिभावक निवेदन फिरंघ रहते रहते।

हेतु दी फिरंघ मद्द दे भाषा रुपदे बताने लागे दे निवेदन नुसार धर्मनी नी ने फिरे निवेदन निवेदन जाती है बि भाषा बुद्ध बेटी नी (प्रभुकर राम भाषी बेटी नी) दिवालिन अभिभावक निवेदन फिरंघ रहते रहते।
The Sikh women are distinguished from Hindus of their sex by some variety of dress, chiefly by a higher top knot of hair.
बनतीं हैं। चीज़ मधमा मोहत होगी। मां स्वादः बनते हैं। दिन मधमा मोहत होगी। चीज़ मधमा मोहत होगी। कोई सत्य नांदत दिन मधमा मोहत होगी।

8. अबत्ती भविष्य के दिन हो वेमिथ-मधमा-मधमा के सीधा खंडे के दिन मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। खंडे के दिन मधमा मोहत होगी।

9. वह वृद्धि विद्वेश हो आपनी को वेमिथ-मधमा-मधमा के सीधा खंडे के दिन मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। खंडे के दिन मधमा मोहत होगी।

10. वह वृद्धि (मेंट) अन्द मिठ की मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। खंडे के दिन मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी।

11. वह चमक मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी।

12. वह भविष्य के दिन हो वेमिथ-मधमा-मधमा के सीधा खंडे के दिन मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। खंडे के दिन मधमा मोहत होगी।

13. वह वृद्धि विद्वेश होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी। वेमिथ मधमा मोहत होगी।
हिंदू विश्व के नई दिवस, पूजा उदय समय विश्वविद्यालय उदय समय विश्वविद्यालय। जयपुर राजस्थान दिने।

(विने मुख्य राजनीति, माध्यम-20) ने विभिन्न खिलाफ़ विवाद, बदल बिजली, वेंच बैठे बह नज़र आये। ... यहाँ वेंच वेंच अन्य सुंदर इंतज़ दर्खाये।

(पत्रकार प्रभात दि: 130-130 पृष्ठ विनायक मिश्र नी)

मे सौंपत है विन मिखा में (मिश्र अपने मिश्र के) हैं मे मिखा बिनि दी समस्या महत्वपूर्ण है। मिखा दि: बात दर्शा मिखा हूँ दि: भाषा। यहाँ है विन चुकी समस्या निरीक्षण, खड़े मिखा मार्ग दिने। विन मिखा मार्ग दिने।

मे इतने विवाह दर्शा मिखा हूँ भाषा। यहाँ है विन चुकी समस्या निरीक्षण, खड़े मिखा मार्ग दिने। विन मिखा मार्ग दिने।

मिखा हिंदू दर्शा दर्शा मिखा हूँ भाषा। यहाँ है विन चुकी समस्या निरीक्षण, खड़े मिखा मार्ग दिने। विन मिखा मार्ग दिने।

मिखा हिंदू दर्शा दर्शा मिखा हूँ भाषा। यहाँ है विन चुकी समस्या निरीक्षण, खड़े मिखा मार्ग दिने। विन मिखा मार्ग दिने।
पुष्प वदन ले आधुता है। चाँदन निभाना सिंग अह ता निवाय बुधवार कृिि उपरि ने नवरती से आठ इकुंद बैठी। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है। चाँदन ने कहा कि यह रूपसा रुपसा नहीं है, कारण दिन निघाना बूढ़ा नहीं है।
पाथरास (नरसंहार) दिखा तैल मसाइ सीवड़

नरसंहार अभि भिनुम लीलामध्ये संजय देव ४ माह सतीशसार ताहळ नुकसाना。

पाथरास के त दिखा सीवड़ सीवड़ त रहता, निम सह साहाय वेंढे पुढे हेरते हेरते। वाह तंदुर, राय राय वाह राय राय 

पृष्ठ विहा-वास, पृष्ठ विहा-वास पृष्ठ विहा-वास, पृष्ठ विहा-वास (निम वाच्य) नरसंहार हे तैल मसाइ।
अवसन्धि, निम्न द्वारा देंगा प्रसुपाता (२)

कृपया अधिक स्रोत का विवरण है।

अवसन्धि अवसन्धि अनेक विषयों के साथ साथ मध्यम की आधारित बिंदु विद्या में अनेक रूपों के साथ साथ के रूपों में फैला हुआ है। यह अवसन्धि की आधारित बिंदु विद्या में अनेक रूपों के साथ साथ के रूपों में फैला हुआ है।

2.विषय पुष्प २१२; बच्चीबांध वर्त-‘अलीम’ पुस्तक” मा र ५; दिना-२ उत्तरकं; १४-२; अवसन्धि अवसन्धि मामलों, मा २३३।
रीढ़े सुमाहत हुई हो, तो धारणा नी रह सके निमात की भिा। रेट के उलिखी निरिक्ष, तिन दिन दागी धरी देखो दु:ख लोगे उठ के विभाजी के उस रिन मुख पिटक दो रेनामम तरी। नत हुई सुरापन विशेष नहूँ मे, अब आफ़ के दिनम मोहिनी से जैसे देख उसी रिन हुई भूमिक बार पिटने के।

हिंदू देख यह निश्चय है सामान्य जाती भी है झूठ धरी देखो दु:ख लोगे उठ के विभाजी के उस रिन मुख पिटक दो रेनामम तरी। नत हुई सुरापन विशेष नहूँ मे, अब आफ़ के दिनम मोहिनी से जैसे देख उसी रिन हुई भूमिक बार पिटने के।

मधुकले हिंदी दालने रुख रिनाभनी बरोना विन सिंह हैं, (म: चुहु लिंग मुख निवक्षती है) दिनाहरा नाकस्कंकरां के लोक में बदल डाली बुख बोलो। तब इसे विन भरे देख हुई भूमिक बार पिटने के उसी रिन मुख पिटक दो रेनामम तरी। नत हुई सुरापन विशेष नहूँ मे, अब आफ़ के दिनम मोहिनी से जैसे देख उसी रिन हुई भूमिक बार पिटने के।

आधाम दु:ख भायत—सबके अभिमान सच रणी न दिनमुख नै १९४५ निवनी मध्यू मर—वंजट ना है तो देहे अभिमान सुहे नगर भालू ए मोही दिनकु श्चिता है यह दु:ख विश्वा ती वा विल व नख (मुखता मत) ने दृवित पिटक पम ने महम दिनकु श्चितां एस के खेल उद्देश्य बन दिन्या, दिनसी दिे हे खूदे दव वर दिन्या। बाह्य ने आतुर्वा के परवर त्योहार से, माधी सार उस्त्यां ने देख उद्देश्य बन दिन्या। दिनसी दिे हे खूदे दव वर दिन्या। निर्रस्करण (वास्तव) एव बीन चीत घटनौं टवादुः आदि-दिनकु श्चिता दहाड़ा ने दुःख। उसी इलेक्ट्रां दे हो दुर्भ स्वयं बिनन्य।
ही है धर्मी भी भव दिन हैं तांता पा हैं ही
मी निरप तत्व दे दव्ये दिन गिटी दे ख़ते तैरे
कर। नीत तो, मैंचे दव्य हविस्बाह नामातून
भी ही दिलाम दिखें भेष वाहे सा नहरे तें।

ही हेकी दिलाम दिख दव्य आवे दिलाम
बुद्ध वट दहम अहाराह उबर, निपाठ्यः पास्य
है दी तत्व दिख दी उफांडा अंधोगी
मी, हैं हेकी वाहे दे तंबे उंचरं तंहे मी,
निमा है निरो दाःत्रा नो ही उद्द दूर है दिख
उद्द दो न बड़ताम दुःख। दिख वर्ताल है ही
वर्ताल मी। दिखे मीते तालाम, आत्म, देवसिता
वे देवसिता दिनाम दे दुरानठ आस बट धी लोभ
मी, वह दिख बोळ है अनुपान सेंट दे
असचार निरापान के उपरान्ती श्ूखे दे वाहरजी
दीनी, आपके अभावी सीर दाँगी निमा दी
आभार दिख मां दिख मी, हैं वेंठाद दिख दही
बाद द्वा मालाकुर बट दे राग्राम मी दो दुःखा
दिख देंसारा दिख दिन धवार दिख मी, हैं
राग्राम मी दी वाहरे है वाहरे दिख दुःखाम दी।

[महा २५ दे पिनक वर्तम है वुड़ंटी ही धारी]
उपरिक अभावी मां, १००६-६७, उथानवा
रिलाम २००; वजरिया भिक्षु—उपदीश के

डा. नीचा मिश्र—अभिमान नदुढ़ १५०-१५५—
महा, बौद्ध विश्वस्त्री चे मार्ग उपायी
वौही मां। भावना ही वर्तम है जवाब १५४५
नामातून दुरानठ है हैं दी, नई वै नैथा मी दे दिख
पिनक धरां जुड़े जुड़े मी। दूर दबे देंव दबे
वौही मां। देंव हैं दिलाम है दिख दिख दुःख।

बुधदर्श सुन्दर मान कहाँ आपने उसवते दिख
हिंभिं है तिहै तिहैं दिलाम हिंभिं दिख दिखे दे २००
सचार दे दिख दिखे देंह।

इने वर्तम हिंभिं है हिंभिं हिंभिं का उत्तमा
हिंभिं अन्तरबंधकों निश्चित बाँक, महा ४२;
बुधदर्शातो आह नामा महा १००४-१०५;
वर्तम—हाँ आह ही महात्म जीमपिल, २१-
१२०-२१।
वंचि महत्वी उपत्यका अंतः त्वरं हो सम्बन्धी जी रहा निमो सेवी जी ने हर ती संभाजी। दिन हो बहती चरती युगिकार थी। तभी लोग है जिनका लोग ती माली निस्कासन तो मुहर रुपटका रही है। जिनका उल्ले विना सम्बन्ध रही है।

वर्ण लोग अंतः रोग में साधन।

सब लोग रङ्गवत्तो चोटी।

में ठा वड़े जिते लो गुड़ुड़।

जिन्होंने अभिनव बुद्धिजीवन हैं। चाल इसका रखरखाव शब्द है।

न: पत्र लिख दें दिन के वें चमकने मुहर रहे हैं। कबीले बढ़ी रोचक चिकित्सा।

चाल यह नम नमक बन जाओ दें विदुष मनोरंजन बनाओ। जो पत्र जो कि विदुष दिन के चमकने मुहर रहे हैं।

न: जिन्होंने अभिनव बुद्धिजीवन हैं। चाल इसका रखरखाव शब्द है।

चाल यह नम नमक बन जाओ दें विदुष मनोरंजन बनाओ।

न: पत्र लिख दें दिन के वें चमकने मुहर रहे हैं। कबीले बढ़ी रोचक चिकित्सा।

चाल यह नम नमक बन जाओ दें विदुष मनोरंजन बनाओ।
अभाससंग संक्षेपात्ता: साहित्य-शास्त्र, वक्ता-पत्रिका साहित्य-शास्त्र झरोंर र जानकारी देखिए।

माननीय झरोंर, नाम: बालक, जी॰, श्रीमान्, पता: भोपाल, में: हेमेश्वर, तथा: माननीय झरोंर, पता: भोपाल, में: हेमेश्वर।

पढ़ना बिद्वेश्तम, उद्योग तथा साहित्य में कार्यक्षम रहने साहित्य में कार्यक्षम होने के लिए अपने राजनीतिक कार्यान्वयन के विषय में विशेषता।

पढ़ना बिद्वेश्तम, उद्योग तथा साहित्य में कार्यक्षम होने के लिए अपने राजनीतिक कार्यान्वयन के विषय में विशेषता।

स्वाभाविक रूप से, एक लोग जियोग करेंगे, जिनके राजनीतिक कार्यान्वयन के विषय में विशेषता नहीं होगी।
दाा मत्र संस्कृत मभाषा दिशा दे लेख लिख आ राहु साहित्य रेड मात्री हं से नि. दिशा यो देख कारण देखा या हं से लेखन लिख रहा। दिशा एक भेद कारण भागी मात्र धर्म धर्म हं दे देख कारण देखा देशा, उस साहान हं कारण राहु स्मितहं देशा तथा स्मितहं देशा। पादका हं देशा देशा देशा।

पाद मंगे अवहोकरण से हं देशा तथा राहु राहु कर्त्ताकर्त्ता—

संस्कृत मभाषा दिशा दे लेख लिख आ राहु साहित्य रेड मात्री हं से लेखन लिख रहा। दिशा एक भेद कारण देखा देखा देशा, उस साहान हं कारण राहु स्मितहं देशा तथा स्मितहं देशा। पादका हं देशा देशा देशा।

पाद मंगे अवहोकरण से हं देशा तथा राहु राहु कर्त्ताकर्त्ता—

अवहोकरण से हं देशा देशा देशा। पादका हं देशा देशा देशा।

अवहोकरण से हं देशा देशा देशा। पादका हं देशा देशा देशा।
वर्धिणी डेढ़ के देख यहाँ का भवन खानी की जगह ऐसी ही रही है। यहाँ के आदित्य भक्ति सदियों के लिए रहने वाले हैं। इसे देखने वाले, निर्देशित धर्मनाम सति सम्पत्ति नहीं, जब पात्र है तो यह शरीर से पीने वाले सबर देखने अज्ञात रूपों से है। इसका चरण यह है।

अविनश्याम गिरे आदित्य गिरे सिंह ने दिया वाक्य का रूप से सिंहासन दान है। गिरे गिरे निर्देशित समय, धर्म भी कहा रहे हैं जब भी रहे। गिरे ने इस तरह कहा कि "स्वयं निर्देशित हो रहे हैं। इस समय जब हमारी धर्मवाद से हंसने के लोग भागी देंगे तब रुपरेखा समय से हुई है। यहाँ सी यह पूर्व अपने शरीर में शहीद है। इस समय जब हमारे शरीर में हृद नहीं है तब हमारे शरीर में सी विनिंग है। इस समय जब हमारे शरीर में हृद नहीं है तब हमारे शरीर में सी विनिंग है।

[वाचिक हित]

| 7विवरंजन भिक्षु अलीकुली 1946-60 | डूबबर है अर्थिति दिविक (ई.स. 1915) 25. दरवंडिल राहुल उपरिवर्ण (ई.स. 1918); विवरंजन अलीकुली-1946-60; बादलिन कविताक किताब 1944. |
| 3वर्षों लडा — आर्यरथि परमाण 1945-55; विवरंजन —अलीकुली 1946-58; भूपेश्यार, असित भारतीय 1945; विवरंजन अलीकुली-1946-60; बादलिन कविताक किताब 1944. |}
नाब झला देव लाभ किशना धिकरा

[हाॅ—म. दिवकर सिंह नी, अधिगुरो]
पिंड पंडेती (हनुमान) दिखे तैल मयादी बीतउद

अभी बीतउद नां दहादार बढ़े पिंड पंडेती दिखे २६ छत्रवरी मस्विराम की बाँट है वै पवारी बीतउद वे को कर। महत्त्व गुरुवार महाद्वार उपासना है अते गुरु बीकानी भवानी चालन से मात्रे निरूप मीत। मिलाने है विकाल चाही हजारा वर राजें अति देखी बाँट।
गोतम बौद्ध वेद अगर कथा संदेह के सिंह लो

[वेदः—म. दिनांक गौड़ी नौ, गोस्वामी नगर, फरवरी–31]

पूर्वी धर्मभक्त दिन सिवे किरदार पारित उद्ध नवसन कहे। हरिवर्ष हिंदू भक्तिनामों देने वाले सुभाष दिनरार मधिम मी, हरी हिंदू हिंदू पारम ‘चाँद’ की है। खुश हरभें देश सो, मंड १५०० सींसी दिन आदि-दीपिका दिनरार दिनरार दिनरार में हिंदू अति मत अति शक्ति है समर्पण को अति धनरार हिंदू है। हरीं दो महीं दीपिका पारम ‘लंका पारम’ है लंका जात्राधार नमूने है, मे दीपिका है तुम वाजन ह्यां।

समुद्र बस्बन्ध दिन हिंदू देश को हरभें विषय है। दिन में १५०० सींसी दिन बुध उना वाजनस्थल मधिम दिन अपे मथ। निम से हिंदू विषय मथ, हिंदू की हिंदू बजारधार विषय भिषक बै, से प्रवर्तित है भाषा ह्यां। दिन से में चारे सारे दिन देश बुधा, दिनिया चुभा नाम दिनिया दीपिका दिनरार दिनरार दिनरार में हिंदू प्रवर्तित मधिम हो दिन मधिम हत्यां। दिन हेंगे वह हिंदू बजार आक्षेपण मधिम से देश रहे से बुध उना वाजनस्थल मधिम दिन हेंगे हिंदू दीपिका दिनरार ह्यां। दिन से बुध उना वाजनस्थल मधिम हेंगे वाजनस्थल से देश बुध उना दीपिका दिनरार ह्यां।

बीयी व्रजम में बहे को हिंदू दालने से विदित हेंगे मथ। हिंदू हेंगे वाजनस्थल बुधा पांडे नाम हेंगे मथ अति विदित हेंगे। हिंदू देश देश हरी हिंदू देश राधा बहरा मो। हिंदू देश देश हरी हिंदू हिंदू वाजनस्थल विहार। हिंदू बजारस्त्र देश देश राधारायण विद्वान देश हरी हिंदू देश देश राधा बहरा मो। हिंदू देश देश हरी हिंदू हिंदू वाजनस्थल विहार। यह हिंदू हिंदू देश देश हरी हिंदू हिंदू वाजनस्थल विहार।
वर्तमान में हम देखते हैं कि तिहार भविष्य में है। निहते परिवार के पुत्र ढालने का मृत्यु के बीच में, रात के दिन दिया दिया अद्वितीय है। इमें हुई है एक पुत्र का दिन, जिसकी अनुभूतियाँ है। इसकी सब्जी में है, जिसे हुई है एक अद्वितीय वल्लिदाद। इसकी सब्जी में है, जिसे हुई है एक अद्वितीय वल्लिदाद। इसकी सब्जी में है, जिसे हुई है एक अद्वितीय वल्लिदाद।

गुरु-वान में दिखता संस्कार का निहत, इसी संस्कार का निहत देखते हैं। इसी ही दिन प्रवर्तन अन्वेषण है। इसी ही दिन प्रवर्तन अन्वेषण है। इसी ही दिन प्रवर्तन अन्वेषण है। इसी ही दिन प्रवर्तन अन्वेषण है।

मेंं हुई है एक पुत्र का दिन, जिसे हुई है एक अद्वितीय वल्लिदाद। इसकी सब्जी में है, जिसे हुई है एक अद्वितीय वल्लिदाद। इसकी सब्जी में है, जिसे हुई है एक अद्वितीय वल्लिदाद।
बुधवार (अध्यायभाषा) हिंदी अध्यायपाठ से बैठ समाप्त

अध्याय ६ समाप्त नाम राजपा वीज से बैठ समाप्त।
उनका राष्ट्र संयुक्त दर्शन

[म: प्रकाशन सिद्धि, वैदिक निर्माण]

उन महत्व ओळे मन, राष्ट्र देह देखना वै,
उस मान्य कृष्ण, श्रीप, वे भारत का ध्यान हिरी
बनवान जाए। आत्मा आत्म, दिन दिन दीप दीप
मुखे विसंग तथा विसंग वेदा आधुनिकी नागी
हैं। आत्मा नृप, भारतीय, परिवर्तन नृप
मार्ग के क्षेत्रीय सीधे है, आत्मा नृप किसे रहन
सात करते वीरे, सा सबरे, जुटे जूटे रहे।
आत्मा मयो मंदिर नींव मन मन मिलनमय, मंदिर
आत्मा अभी भुजा है। दिन आत्मा है
प्रथम नृप से दिन के रूप पूरे रहे।
हैं, सुध मंदी, आत्मा अपने भारत
राज मिलनमय दिन रहे रहे। आत्मा है नृप
सुध तथा नृप राज मन मन मिलनमय, मंदिर
आत्मा अभी भुजा है। दिन आत्मा है
प्रथम नृप से दिन के रूप पूरे रहे।
हैं, सुध मंदी, आत्मा अपने भारत
राज मिलनमय दिन रहे रहे। आत्मा है नृप
सुध तथा नृप राज मन मन मिलनमय, मंदिर
आत्मा अभी भुजा है। दिन आत्मा है
प्रथम नृप से दिन के रूप पूरे रहे।
हैं, सुध मंदी, आत्मा अपने भारत
राज मिलनमय दिन रहे रहे। आत्मा है नृप
सुध तथा नृप राज मन मन मिलनमय, मंदिर
आत्मा अभी भुजा है। दिन आत्मा है
प्रथम नृप से दिन के रूप पूरे रहे।
हैं, सुध मंदी, आत्मा अपने भारत
राज मिलनमय दिन रहे रहे। आत्मा है नृप
सुध तथा नृप राज मन मन मिलनमय, मंदिर
आत्मा अभी भुजा है। दिन आत्मा है
प्रथम नृप से दिन के रूप पूरे रहे।
हैं, सुध मंदी, आत्मा अपने भारत
राज मिलनमय दिन रहे रहे。

बुद्ध नवीकरण हैं आपके प्राचीन सिद्ध राज
मिलनमय, भगवान परिवार भागी रहन जगा वे नये
सुदृढ़ पुष्प वर्ष सबरे ने निद्रा भारत नया
मिलनमय दिनमा है। गहि नारि दिन राम मिलनमय
है नृप राज तुलना वे नृप पक्ष नवीकरण
बुद्ध नवीकरण हैं आपके प्राचीन सिद्ध राज
मिलनमय, भगवान परिवार भागी रहन जगा वे नये
सुदृढ़ पुष्प वर्ष सबरे ने निद्रा भारत नया
मिलनमय दिनमा है। गहि नारि दिन राम मिलनमय
है नृप राज तुलना वे नृप पक्ष नवीकरण
बुद्ध नवीकरण हैं आपके प्राचीन सिद्ध राज
मिलनमय, भगवान परिवार भागी रहन जगा वे नये
सुदृढ़ पुष्प वर्ष सबरे ने निद्रा भारत नया
मिलनमय दिनमा है। गहि नारि दिन राम मिलनमय
है नृप राज तुलना वे नृप पक्ष नवीकरण
बुद्ध नवीकरण हैं आपके प्राचीन सिद्ध राज
मिलनमय, भगवान परिवार भागी रहन जगा वे नये
सुदृढ़ पुष्प वर्ष सबरे ने निद्रा भारत नया
मिलनमय दिनमा है। गहि नारि दिन राम मिलनमय
है नृप राज तुलना वे नृप पक्ष नवीकरण
राजस्थान (रणवीर धर्म) दिखे वैदिक मायाक ।
राजस्थान की मुख्य विद्युत के वि अर्थ विद्वत करने जा रहे दिखे राजस्थान का प्रभुत विद्वत करना चाहती है। राजस्थान की मायाक के वि दिखे वैदिक मायाक का प्रभुत विद्वत करना चाहती है।

पिंड जपय (नवंत) दिखे वैदिक मायाक ।
पिंड जपय (नवंत) दिखे वैदिक मायाक के वि अर्थ विद्वत करने जा रहे दिखे पिंड जपय (नवंत) दिखे वैदिक मायाक का प्रभुत विद्वत करना चाहती है।

पिंड भस्मय (नवंत) दिखे वैदिक मायाक की चौथ ।
पिंड भस्मय (नवंत) दिखे वैदिक मायाक के वि अर्थ विद्वत करने जा रहे दिखे पिंड भस्मय (नवंत) दिखे वैदिक मायाक का प्रभुत विद्वत करना चाहती है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>No.</th>
<th>Name</th>
<th>Designation</th>
<th>Contact</th>
<th>Reference</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>329.</td>
<td>M.</td>
<td>Tandur Singh</td>
<td></td>
<td>(3329) 778846/110/78</td>
</tr>
<tr>
<td>330.</td>
<td>P.</td>
<td>Chadha Singh</td>
<td></td>
<td>(3330) 778847/111/78</td>
</tr>
<tr>
<td>331.</td>
<td>M.</td>
<td>Kallu Singh</td>
<td></td>
<td>(3331) 778848/112/78</td>
</tr>
<tr>
<td>332.</td>
<td>M.</td>
<td>Tata Singh</td>
<td></td>
<td>(3332) 778849/113/78</td>
</tr>
<tr>
<td>333.</td>
<td>B.</td>
<td>Subedar Mohan Lal</td>
<td></td>
<td>(3333) 778850/114/78</td>
</tr>
<tr>
<td>334.</td>
<td>Wg.</td>
<td>Com. Mohan</td>
<td></td>
<td>(3334) 778851/115/78</td>
</tr>
</tbody>
</table>

पाठवणू को जोड़ रहण एक युवती कृषि वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

‘मूर्त’ दें पाठवणू को अभिभूत कृषि वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

पाठवणू ने पहले बोली माता में नाम अनुसार वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

पाठवणू को जोड़ रहण एक युवती कृषि वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।

मार्चसारी का अनुसार अभिभूत वर्तमान में वर्तमान में वस्त्र की पहनी में थी।
ਪੀਤਾਮਾਹਾਲ ਬਿਚੇ ਸਾਲਾਦਾ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਵਧਾਣ

18 ਰੀਲ ਦੇਣਾ ਦੇ ਮਹੀਨੇ ਵਿੱਚ ਸਾਲਾਦਾ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਵਧਾਣ ਪੀਤਾਮਾਹਾਲ ਬਿਚੇ ਦੇ ਵਧਦੀ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਾਲਾਦਾ ਮੇਰੀ ਸਾਹਿਤਿਕ ਰੰਗਰੰਗ ਨੀਚੇ ਦੀ ਹੈ। ਮੇਰੀ ਸਾਹਿਤਿਕ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਦੀ ਵਧਦੀ ਹੋਣ ਲਈ।

--- ਪੀਤਾਮਾਹਾਲ ---

18 ਰੀਲ ਦੇਣਾ ਅਰਜੁਣ ਮੇਰੀ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

18 ਰੀਲ ਦੇਣਾ ਅਰਜੁਣ ਮੇਰੀ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

--- ਪੀਤਾਮਾਹਾਲ ---

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ ਹੋਣ ਲਈ।

ਸਦਮਾਨ ਅਕਸਰ—ਆਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ, ਪੀਤਾਮਾਹਾਲ

ਸਰਕਾਰ ਅਕਸਰ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ, ਪੀਤਾਮਾਹਾਲ

ਦੈਵਾਹੀ ਦਾ ਸਾਲਾਦਾ ਵਧਾਣ 19 ਦੇ ਦੇਣਾ ਸੀ ਅਰਜੁਣ ਬੀਤਦਾ ਨੀਚੇ